घर छोड़ने को मज़बूर लड़की

घर छोड़ने को मज़बूर लड़की

उस समय युद्ध का माहौल था. वहीँ से यह कहानी शुरू होती है.

यह अज़्ज़ी की कहानी है.

युद्ध, हर दिन अज़्ज़ी के घर के करीब आ रहा था, फिर भी उसकी ज़िंदगी ठीक-ठाक चल रही थी.

अज़्ज़ी के पिता अभी भी एक बच्चों के डॉक्टर की हैसियत से काम कर रहे थे.

उसकी माँ सुंदर कपड़े सिलती थीं.

उसकी दादी गर्म कंबल बुनती थीं.

सुबह के समय दादी, अज़्ज़ी को स्कूल छोड़ती थीं.

फिर शाम को अज़्ज़ी के दोस्त उसके साथ खेलने के लिए अक्सर घर आते थे.

कभी-कभी वे बगीचे की दीवार के ऊपर से सैनिकों को सड़क पर लेफ्ट-राइट करते हुए को देखते थे.

कभी-कभी हेलीकॉप्टरों और फौजी हवाईजहाज़ों का शोर इतना तेज होता था .....

.....कि मुर्गियां भी अंडे देने से डरती थीं.

फिर एक दिन शाम को फोन बजा.
पिताजी को एक बहुत खराब खबर मिली
उससे उनका चेहरा पीला पड़ गया.
उन्होंने परिवार के सभी लोगों से कहा.
"जल्दी करो! तुरंत कार मे बैठो!
समय कम है, सामान बाँधने का वक्त नहीं है,
हमें तुरंत अपना देश छोड़ना होगा.
यह एक भयानक खतरे की घडी है! ”
फिर उस एक पल में, अज़्ज़ी का जीवन हमेशा के लिए बदल गया.

पिता, माँ, अज़्ज़ी और दादी जल्दी से घर में भागे.
पिता ने राजमा का बोरा उठाया. माँ ने दादी का बना कंबल लिया.
अज़्ज़ी ने अपने प्रिय भालू बोबो को हाथ में पकड़ा. दादी ने अज़्ज़ी को कोट पहनाया.

"मैं यहीं पर रहूंगी, घर की देखभाल करने के लिए," दादी ने कहा,
"मेरी जान को यहाँ कोई खतरा नहीं है. तुम चिंता मत करना, मैं बाद में आऊंगी."
लेकिन अज़्ज़ी के लिए, अपनी दादी को पीछे छोड़कर जाना सबसे दुखदायी बात थी.

माँ ने अज़्ज़ी को कार की पिछली सीट पर छिपा दिया और उसके ऊपर दादी का कंबल डाल दिया.

पिता कार को पहाड़ों की ओर तेजी से ड्राइव करते हुए गए.

मां ने माहौल को खुश रखने के लिए गाने गाए.

फिर कार को किसी ने रोका. तेज़ टॉर्च की रोशनी का प्रकाश कार की खिड़कियों से अंदर चमका. सैनिकों ने चिल्लाकर कहा, "हमें अपने कागजात दिखाओ!" अज़्ज़ी चुपचाप लेटी रही. वो जानती थी कि उसके कागजात नहीं थे. वो डरी हुई थी. लेकिन सैनिकों ने उसे नहीं देखा.

अब पिता ने पहले से भी ज्यादा तेजी से कार चलाई.

अज्जी बहुत भूखी थी, वो बहुत प्यास भी लगी थी.

वह अपने भालू बोबो को कसकर पकड़े रही. अंत में वो सो गई.

जब वो जागी तो कार रुक चुकी थी.
माँ ने दरवाजा खोला और अज़्ज़ी को सुबह की ठंडी हवा में बाहर निकाला.
उनके सामने चौड़ा और शांत समुद्र था.

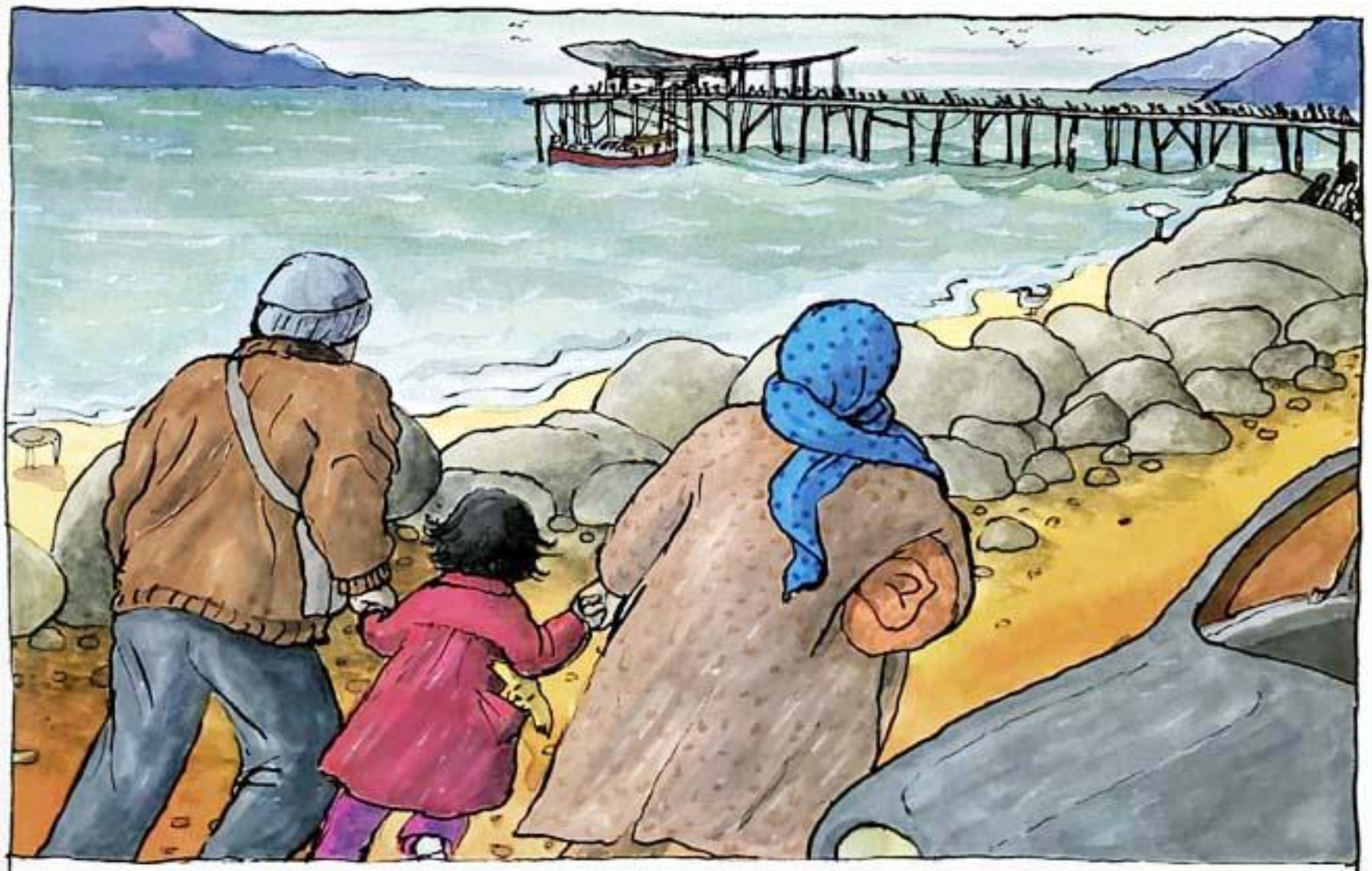

समुद्र में दूरी पर एक नाव घाट से बंधी थी. सभी लोग उसकी ओर भाग रहे थे.
पिता, माँ और अज़्ज़ी ने कार को किनारे पर ही छोड़ दिया और वे भी नाव की तरफ दौड़े.

जेट्टी पर, लोग चिल्ला रहे थे और एक-दूसरे को धक्का दे रहे थे.
लोग युद्ध के खतरे से बचने के लिए जल्दी से नाव तक पहुँचने की कोशिश कर रहे थे.
पिता और माँ भी अपनी पूरी ताकत से आगे बढ़े.

वे एक सीढ़ी से नीचे उतरे और नाव में सवार हुए.
"नाव भर गई है! अब और मुसाफिर नहीं चढ़ सकते!" नाव वाला चिल्लाया.
फिर उसने नाव की रस्सी को खोला और इंजन स्टार्ट किया.
फिर नाव तेज़ी से आगे बढ़ी. कुछ देर में वे खुले समुद्र में थे.

लहरों से नाव लगातार ऊपर-नीचे हिचकोले खाती रही. कई दिन और रात बीते.
छोटी नाव समुद्र को चीरती हुए लगातार आगे बढ़ती रही.

जब अज़्ज़ी ने अपने सूखे होंठों को चाटा, तो उसे समुद्री नमकीन पानी का स्वाद चखने को मिला.
उसके भालू बोबो का फर खारे समुद्री पानी से सख्त हो गया था.
सोते समय उसके चारों ओर दादी का कंबल नम और ठंडा था.

अब एक नया दिन शुरू होने वाला था. आसमान में एक ही तारा बचा था.
सामने की भूमि गुलाबी और धूसर थी.
पहली बार, अज़्ज़ी ने एक नए देश को अपने सामने देखा.

नए देश में सब कुछ अलग था. लोग अलग दिख रहे थे.
उन्होंने अज़्ज़ी को जो खाना दिया, वो भी बिल्कुल अलग था.
अपने कागज़ात दिखाएँ, सर?
वहां लोग जिस भाषा में बातें कर रहे थे उसे पिता और माँ समझने में असमर्थ थे.

फिर एक आदमी आया जो अज़्ज़ी के देश की भाषा में बोला.
उसने पिताजी से काफी देर तक बात की.

कुछ देर बाद एक बस
उन्हें एक नए घर में ले गई.

लेकिन वो उनके पुराने घर से बहुत अलग था. वो छोटा घर, सिर्फ एक कमरा, जिसके बाहर एक बाथरूम था.
"देखो अज़्ज़ी," माँ ने कहा, "दयालु लोगों ने हमें कुछ फर्नीचर और खाना पकाने का एक बर्तन दिया है."
"मुझे जल्द ही काम करने की अनुमति मिल जाएगी," पिताजी ने कहा. "फिर मैं अपने परिवार के लिए एक अच्छा घर बनाऊंगा."
लेकिन अज़्ज़ी ने सोचा, "हम दादी के बिना एक अच्छा घर कैसे बना पाएंगे?"

कई दिनों तक, माँ और अज़्ज़ी बड़े शहर की सड़कों पर घूमे.
फिर उन्हें एक ऐसे स्कूल के बारे में पता चला जिसमें अज़्ज़ी के लिए जगह थी.

अज्जी ने अपने नए शिक्षक से मुलाकात की. टीचर ने उससे हाथ मिलाया और विनम्रता से कहा, "हैलो अज्जी. मेरा नाम मिस्टर मिलर है. मैं सोमवार को स्कूल में तुम्हारी राह देखूँगा." माँ को सिर्फ 'सोमवार ' शब्द ही समझ में आया. माँ ने अपना सिर हिलाया और मुस्कुराईं.

इतवार की रात को माँ ने अज़्ज़ी को सोफे पर लिटा दिया.
पर अज़्ज़ी बस अपनी दादी के बारे में सोचती रही - वो युद्धग्रस्त देश में अकेली कैसी होंगी?

फिर उसने अपने नए स्कूल के बारे में सोचा.
क्योंकि वो नई भाषा नहीं जानती थी तो फिर वो नए दोस्त कैसे बनाएगी?
वो नए टीचर की बातों को कैसे समझेगी?

स्कूल में बहुत शोर था! बच्चे, अज़्ज़ी के पीछे भागे. उनके कपड़े अलग थे, उनकी भाषा अलग थी. किसी बच्चे ने अज़्ज़ी से नमस्ते तक नहीं की.

फिर घंटी बजी. मिस्टर मिलर की कक्षा में अज़्ज़ी, बाकी बच्चों के साथ घुसी. वो दुखी थी और उसे रोना आ रहा था. पर उसने खुद से कहा, "मैं रोऊँगी नहीं."

मिस्टर मिलर ने बच्चों को चुप करने के लिए हाथों से ताली बजाई. उन्होंने कहा, "अज़्ज़ी आज से हमारे क्लास में पढ़ेगी. इसलिए कृपा कर आप सभी उसका स्वागत करें!" लेकिन अज़्ज़ी, मिस्टर मिलर की बातों को समझ नहीं पाई.

फिर कुछ देर बाद अज़्ज़ी ने कुछ ऐसे
शब्द सुने जिन्हें वो समझ सकती थी.

अज़्ज़ी ने एक दयालु चेहरे वाली महिला को देखा.
उन्होंने कहा, "हैलो अज़्ज़ी, मेरा नाम सबीन है.
मैं तुम्हारी मदद करने आई हूं."

वो शांत स्वर में अज़्ज़ी
की अपनी भाषा में बोली.

सबीन, ने अज़्ज़ी को बताया कि मिस्टर मिलर क्या कह रहे थे.
उसने अज़्ज़ी को कुछ नए शब्द भी सिखाए.
जल्द ही अज़्ज़ी 'हैलो' 'अलविदा' और 'मेरा नाम अज़्ज़ी है,' कहना सीख गई.

लेकिन लंच के समय अज़्ज़ी को फिर से अकेलापन महसूस हुआ. उसने माँ का बनाया खाना खाया, जो दूसरे बच्चों के लंच से बिल्कुल अलग था.

खाना खाने के बाद उसने खूंटी से अपना कोट उतारा और फिर खेल के मैदान में चली गई.

एक लड़की उसकी तरफ दौड़ती हुई आई.
"नमस्ते!" लड़की ने कहा. "मेरा नाम लूसी है."
अज़्ज़ी ने सबीन के सिखाए सबक को याद किया.
"अलविदा," उसने कहा. "मेरा नाम अज़्ज़ी है."

"तुम्हारा मतलब 'हैलो' है," लूसी ने हंसते हुए कहा.
"नमस्ते, मेरा नाम अज़्ज़ी है, अलविदा," अज़्ज़ी ने कहा. लूसी ज़ोर से हँसी, और फिर अज़्ज़ी भी हँसी.
"चलो हम रस्सी कूदते हैं," लूसी ने कहा.

जब लूसी ने रस्सी कूदी तो अज़्ज़ी ने उसे देखा.
रस्सी में पैर फंसने से पहले लूसी पांच बार रस्सी कूदी. उसके बाद अज़्ज़ी की बारी थी.

रस्सी में पैर फंसने से पहले, अज़्ज़ी बीस बार कूदी. उस दिन अज़्ज़ी ने एक नया शब्द सीखा, 'स्किप'.

जैसे-जैसे दिन बीते, सबीन अक्सर स्कूल के काम में अज़्ज़ी की मदद करने लगी.
एक सुबह अज़्ज़ी ने बंदूकों और हेलीकॉप्टर का चित्र बनाया.

जल्द ही अज़्ज़ी ने सबीन को युद्ध की कहानी सुनाई. उसने बताया कि वो पिता और माँ के साथ कैसे बच कर निकली, और दादी को छोड़ना उसके लिए सबसे दुःख की बात थी. "मुझे पता है तुम कैसा महसूस करती होगी," सबीन ने कहा. "मैं केवल छह वर्ष की थी जब हमने अपना देश छोड़ा."

सबीन ने अज़्ज़ी को अपने पलायन की कहानी सुनाई.

"मैं अपने परिवार के साथ जंगल में से होकर गुज़री,

हमनें नदियों पार कीं,

हम पहाड़ों पर चढ़े,

फिर हम एक शिविर में आए.

हम कई वर्षों तक उस शिविर में रहे.

उसके बाद मुझे जाने की अनुमति मिली.

लेकिन मेरे परिवार को पीछे रहना पड़ा, और यह सबसे दुखदाई बात थी.

"लेकिन एक दिन वे मुझ से यहाँ आकर मिलेंगे," सबीन ने कहा. "मुझे लगता है कि तुम भी एक दिन अपनी दादी से फिर मिलोगी."

उसके बाद, सबीन अक्सर माँ से मिलती और उनसे बात करती थी. एक दिन उसने कहा, "अज़्ज़ी स्कूल में बहुत अच्छी तरह सीख रही है. उसकी अंग्रेजी रोज़ाना बेहतर हो रही है."
"मैं नहीं चाहती कि वो अपने देश की भाषा भूले," माँ ने कहा.
"नहीं नहीं!" सबीन ने हँसते हुए कहा. "वह दोनों भाषाएं बोलेगी, जैसे मैं बोलती हूं."

घर के रास्ते में माँ ने अज़्ज़ी को उस दिन सीखे नए शब्द बताए. 'मुझे वह पसंद है', और 'वो कितना है?' और 'केले'.

अज़्ज़ी ने भी माँ को उस दिन सीखे नए शब्द बताए. 'क्या मैं यह ले सकती हूँ?' और 'यह क्या है?' और 'दादी'

जब पिता घर आए, तो वे उस दिन सीखे गए नए शब्दों को बताने के लिए बहुत थक गए थे. वह लेट गए और माँ ने खाना बनाया.

"क्या आपको अभी तक कुछ काम मिला, पिताजी?" अज़्ज़ी ने पूछा.

"नहीं अज़्ज़ी," पिताजी ने कहा. मुझे यहां काम करने की अनुमति अभी तक नहीं मिली है. अगर मेरा एक बगीचा होता, तो मैं कम-से-कम लाल राजमा के बीज तो बो सकता था. फिर हम भोजन तो उगा सकते थे. लेकिन अब मेरी फलियाँ बेकार पड़ी हैं. मुझे और कुछ करने को नहीं है." यह कहकर उन्होंने अपनी आँखें बंद कर लीं.

स्कूल में, अज़्ज़ी ने अंग्रेजी में दस तक की गिनती सीखना शुरू की.
"जल्द ही तुम मेरे पैरों की उंगलियों को भी गिन पाओगी," सबीन ने कहा.

दोपहर के भोजन के समय वह अक्सर लूसी से भोजन की अदला-बदली करती थी.
लूसी ने कहा, "मुझे तुम्हारे चने बहुत पसंद आए!"

फिर वसंत के एक गर्म दिन मिस्टर मिलर ने कक्षा से कहा.
"कल हम बागवानी का सबक शुरू करेंगे. हम स्कूल के बगीचे में अपने-अपने बीज बोयेंगे. बताओ, हम क्या-क्या पौधे उगा सकते हैं?"
"मैं!" सब बच्चे एक-साथ चिल्लाए .

उन्होंने चित्र बनाए....

टमाटर,

सलाद के पत्ते,

कद्दू,

और सूरजमुखी.

लेकिन तब अज़्ज़ी सपना देख रही थी. वो घर पर अपने बगीचे का सपना देख रही थी कि कैसे टमाटर हरे से लाल रंग में बदलता था, कैसे लेट्यूस की पत्तियां फैलती थीं, कैसे कद्दू की बेल बाड़ पर चढ़ गई थी, कैसे सूरजमुखी ने अपना चेहरा रसोई की तरफ किया था, जहां अज़्ज़ी अपना मनपसंद मसालेदार राजमा खाने बैठी थी.

अज़्ज़ी उठ कर बोर्ड पर गई. उसने स्केच पेन से राजमा बीन का बीज बनाया.
"वाह, अज़्ज़ी," मिस्टर मिलर ने कहा.
"हम उसे खा सकते हैं, या हम उसे जमीन में बो सकते हैं. फिर उस सेम के पौधे से हमें कई नए फलियां मिलेंगी."
उसी क्षण, अज़्ज़ी के दिमाग में एक शानदार विचार आया.

बेशक! वो पिता के बैग में से राजमा के विशेष बीज लेगी.

वो खुद उन्हें स्कूल के बगीचे में लगाएगी.

फिर वो पिता को एक अद्भुत आश्चर्य में डालेगी!

अपने कमरे में वापस आकर अज़्ज़ी बैग की तरफ भागी.

उसने उँगलियों से अंदर टटोला. बैग खाली था!

और कमरे में स्वादिष्ट भोजन की खुशबू थी!

"देखो, अज़्ज़ी," माँ ने कहा. "आज मैंने तुम्हारा पसंदीदा खाना बनाया है - मसालेदार राजमा!"

अज्जी की आँखों से तेजी से आँसू क्यों गिरने लगे?

तुम आज थक गई होगी, प्यारी बेटी!

माँ, अज्जी के दर्द को नहीं समझ पाईं.

अज़्ज़ी के लिए उस दिन मसालेदार राजमा खाना बहुत कठिन था. वो उस बारे में सोच रही थी कि प्रत्येक बीज एक लंबी बेल में कैसे विकसित होगा, फिर बेल, बीन्स की फलियों से लद जाएगी और फिर सर्दियों में वो माता-पिता और पूरे स्कूल के खाने के लिए बीन्स ऊगा पाएगी. वो पिताजी को भी खुश कर सकती थी, जैसे वो पुराने घर में खुश रहते थे.

अज़्ज़ी को नींद नहीं आई. इसलिए उसने पुराने, बीते खुशहाल समय के बारे में सोचने का फैसला किया. उसने माँ द्वारा उसके लिए एक नई ड्रेस बनाने के बारे में सोचा. उसने दादी के साथ ऊन को कातने के बारे में सोचा. लेकिन वो फिर से हमेशा की तरह, चिंता करने लगी. क्या वे इस सुरक्षित नए देश में रह पाएंगे? दादी को पुराने घर में कोई खतरा तो नहीं था?

लेकिन अचानक अज़्ज़ी की आँख खुली.
गद्दी के नीचे कुछ चुभ रहा था!

राजमा के बीज! कुछ बीज बैग से गिर कर खो
गए थे और सब लोग उन्हें भूल गए थे.

राजमा के उन बीजों को न तो किसी ने
पकाया था और न ही उन्हें खाया था.

अज़्ज़ी के लिए स्कूल के बगीचे में बोने के
लिए राजमा के वो आठ आदर्श बीज थे.

उसने सोफे पर चढ़कर उन बीजों को सावधानी
से अपने कोट की जेब में डाल दिया.

फिर वो दादी के कंबल के नीचे
दुबककर खुशी-खुशी सो गई.

राजमा के आठ बीज! आज उन्हें बोने का दिन था. अज़्ज़ी ने स्कूल के बगीचे में आठ लकड़ी की टहनियों को ज़मीन में धँसाया. उसने प्रत्येक टहनी के पास हरेक राजमा के बीज के लिए एक-एक छेद किया.

"तुम्हें इस तरह से राजमा के बीन्स बोना किसने सिखाया, अज़्ज़ी?" मिस्टर मिलर ने पूछा.
"मेरी दादी ने," अज़्ज़ी ने कहा.
"और अब तुम वो हमें सिखा रही हो," सबीन ने कहा.

स्कूल से घर के रास्ते में अज़्ज़ी सिर्फ स्कूल के बगीचे में उगने वाली राजमा की फलियों के बारे में ही सोच रही थी.

लेकिन माँ भी अपने दिल में एक राज़ छिपाए हुए थीं. वो काफी खुश लग रही थीं और मुस्कुरा रहीं थीं.

आश्चर्य! अचंभा!

और जब उन्होंने सड़क पार की,

क्या तुम तैयार हो?

वो अपने कमरे के दरवाजे के ठीक सामने पहुंची.

माँ ने कहा, "अपनी आँखें बंद करो, अज़्ज़ी."

"चलो, अब अपनी आँखें खोलो," माँ ने कहा.

अज़्ज़ी चिल्लाई, "दादी!"

और फिर वो दादी से जाकर लिपट गई. और वो खुशी के मारे रो पड़ी.
दादी भी खुशी के मारे रो पड़ीं. और अज़्ज़ी के माता-पिता भी.

दादी बहुत थकी हुई थीं, लेकिन खाने के बाद उन्होंने अपनी कहानी सुनाई.

"दुष्ट आदमी बंदूकों के साथ घर में घुसे. मैं बहुत डरी थी.

मुझे सब कुछ छोड़कर आना पड़ा - सुंदर घर, बगीचा, मुर्गियाँ.

यात्रा के लिए मैंने अपने सोने के कंगन बेच दिए.

फिर एक बड़ी लॉरी में मैंने रात भर यात्रा की. वो बड़ा कठिन और खतरनाक सफर था.

दिन के दौरान, हमें रूककर छिपना पड़ा.

फिर जब मैं यहां पहुंची तो मुझे डर था कि वे कहीं वो मुझे वापस न भेज दें.

मुझे तब बहुत खुशी हुई जब उन्होंने मुझे बताया कि मैं यहाँ रह सकती हूं.

अभी के लिए हम सुरक्षित हैं और हम एक-साथ हैं. और यही बात सबसे ज़्यादा मायने रखती है," दादी ने कहा.

उस भीड़ भरे कमरे में कई हफ्ते बिताने के बाद एक दिन सुबह, पिता के कागजात आ गए.
"हम यहाँ रह सकते हैं!" पिता जी चिल्लाए.
"हम यहाँ सुरक्षित हैं! और अब मैं काम भी कर सकता हूँ! सभी, मेरे पीछे आओ!"

वे दरवाजे से बाहर निकल कर नीचे बाहर भागे. फिर वे एक कोने में, एक बगीचे से जुड़े एक छोटे फ्लैट में गए.

"क्योंकि अब मैं काम कर सकता हूं, इसलिए हम यहां रह सकते हैं," पिता ने कहा.
"यहाँ दो कमरे हैं, एक बाथरूम और एक बगीचा है जहां हम अपनी सब्जियां उगा सकते हैं."
"यहाँ सिलाई मशीन के लिए भी जगह है!" माँ ने कहा.
"कताई करने के लिए भी!" दादी ने कहा.
"यहाँ लूसी के साथ रस्सी कूदने की भी जगह है!" अज़्ज़ी ने कहा.
फिर उसने सोचा, "मेरा नया घर कभी भी मेरे पुराने घर जैसा तो नहीं होगा,
लेकिन वो हर समय बेहतर हो रहा है."

पूरी गर्मियों में, अज़्ज़ी ने स्कूल
में नई-नई चीजें सीखीं.

घर पर, दादी ने पुराने दिनों के
बारे में कहानियाँ सुनाईं.

फिर एक दूसरे देश का लड़का जमाल वहां आया.
अज़्ज़ी और लूसी ने उसकी अंग्रेजी भाषा सीखने में मदद की.
जमाल रस्सी कूदने में बहुत उस्ताद था.

हर दिन राजमा के पौधे स्कूल के
बगीचे में अपनी छड़ों पर और ऊपर
उठते थे, और मधुमक्खियां उनके
फूलों पर मंडराती थीं. फिर बेल में से
हरी फलियां नीचे लटकने लगीं और
उनके अंदर नए बीन्स बढ़ने लगे.

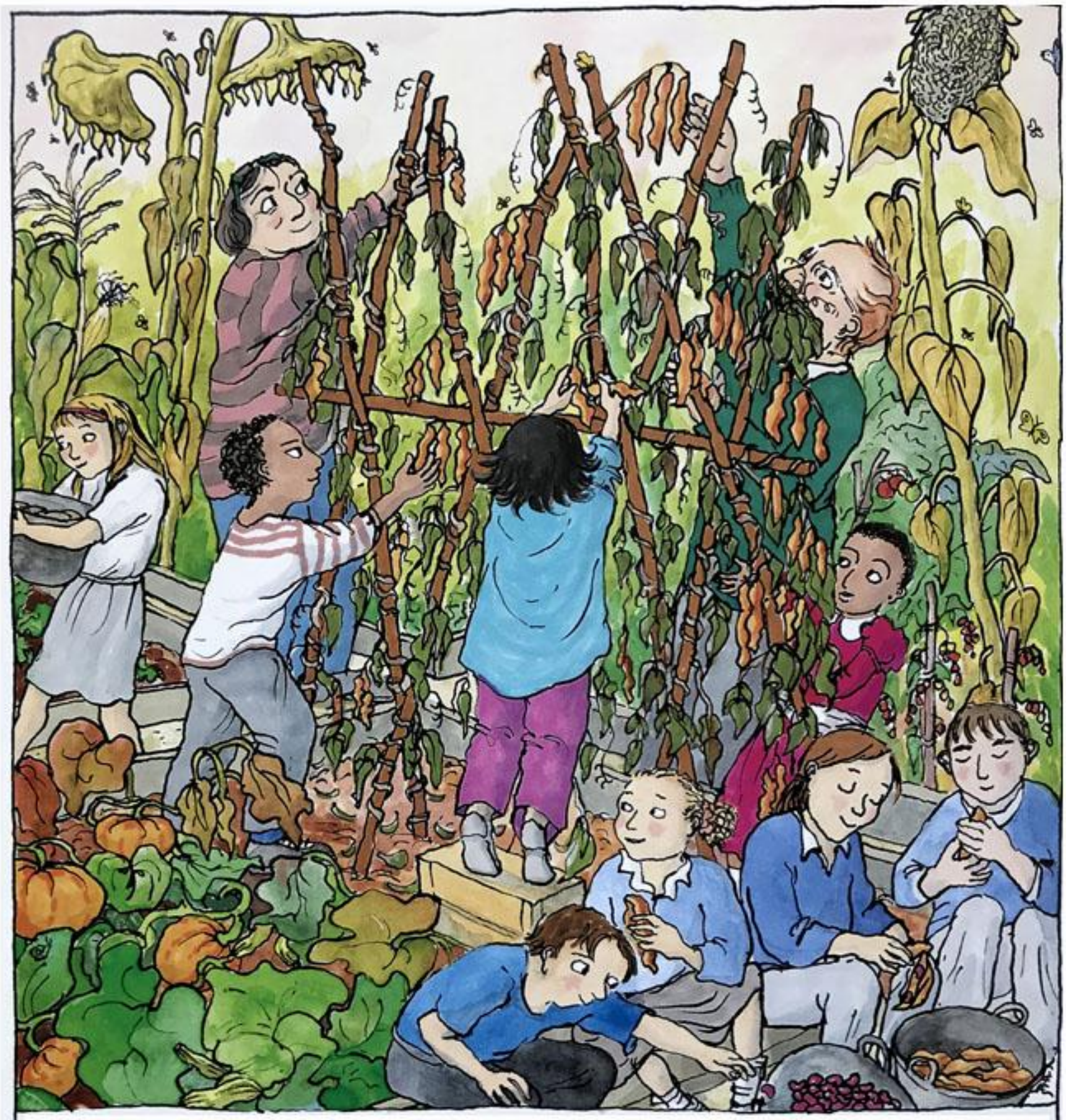

अब गर्मी लगभग खत्म हो चुकी थी. अज़्ज़ी के राजमा के पौधों के तने भूरे और सूखे थे, और उनकी फलियाँ में बीन्स झुनझुने जैसे आवाज़ करने लगे थे.
"पुराने देश में, इस समय वो तोड़ने के लिए तैयार होते," अज़्ज़ी ने कहा.
फिर सभी बच्चों, मिस्टर मिलर और सबीन ने मिलकर राजमा की फलियों को तोड़ा और उन्हें छीलकर बीजों को अलग किया. राजमा के लाल बीजों से एक थैली भर गई.
"क्या हम बगीचे में अगले साल वसंत में बोने के लिए अज़्ज़ी के कुछ बीज रख सकते हैं?" मिस्टर मिलर से पूछा.
"फिर, अगले साल, हम अपने स्कूल के भोजन के लिए पर्याप्त फलियाँ उगा पाएंगे."
"आप ऐसा ज़रूर करें," अज़्ज़ी ने कहा. और अब अज़्ज़ी नए देश की नई भाषा में बोल रही थी.

अज़्ज़ी राजमा के बीजों की थैली घर ले गयी. पिता ने उन्हें देखा. फिर उन्होंने गौर से देखा.
उन्होंने राजमा के बीजों को अपनी उंगलियाँ से हिलाया.
उन्होंने कहा, "लेकिन ये बीज तो बिल्कुल हमारे पुराने देश से लाई गई फलियों की तरह ही हैं!"
"बेशक!" अज़्ज़ी ने कहा. "मुझे उनमें से आठ बीज सोफे के कुशन के नीचे पड़े मिले थे.
फिर मैंने उन्हें स्कूल में बगीचे में बोया. इसलिए अब हमारे पास एक बैग राजमा के बीन्स हैं!"
पिताजी ने अज़्ज़ी को अपने गले लगाया.

उन्होंने अगले वसंत में
अपने बगीचे में बोन के लिए
कुछ बीज अलग निकाले.

दादी ने खाना पकाने के लिए
कुछ राजमा के बीन्स लिए.

माँ ने बाकी बीन्स को
सर्दियों के भोजन के लिए
संभाल कर रखा.

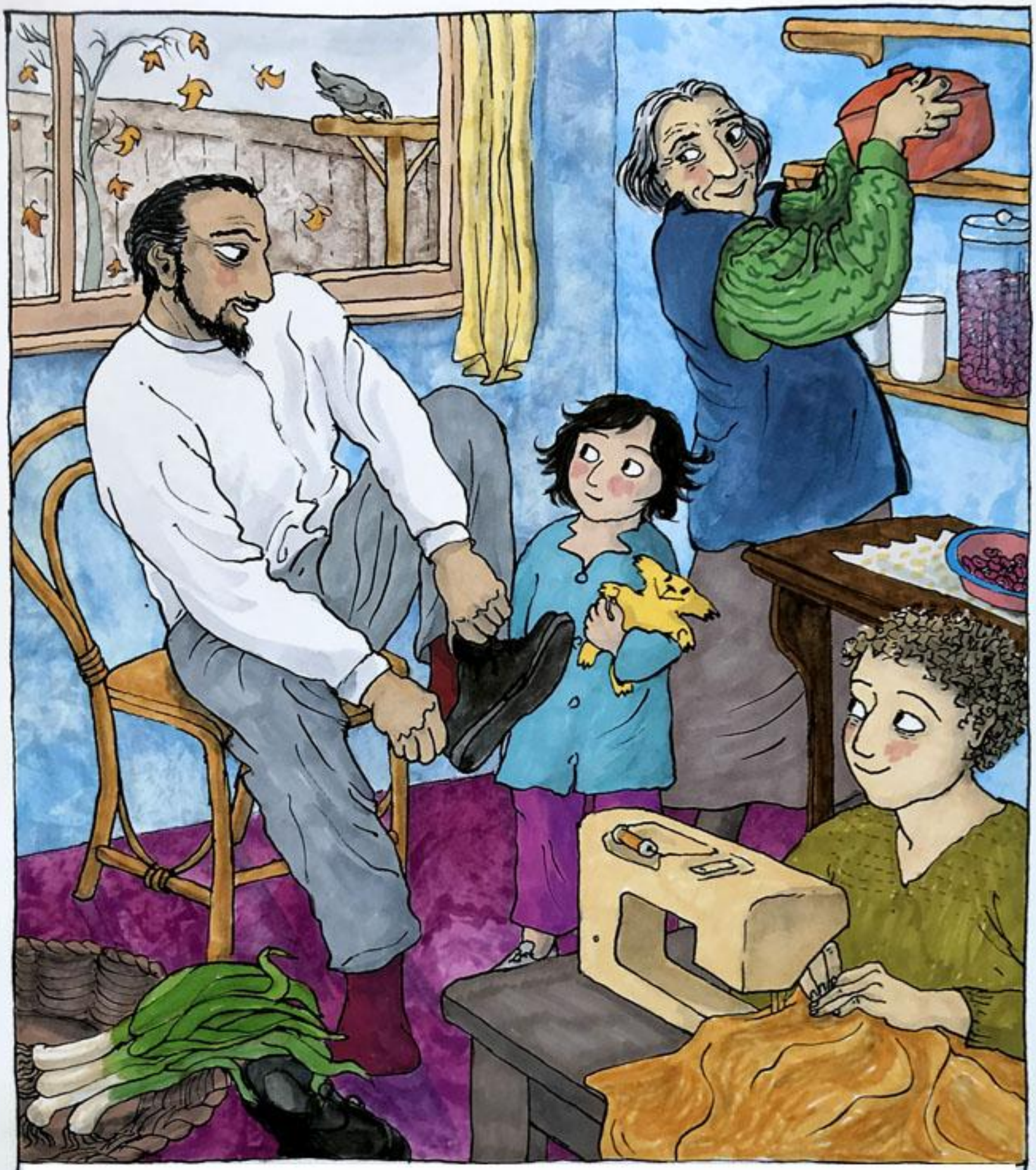

"क्या आप अब खुश हैं, पिताजी?" अज़्ज़ी ने पूछा.
"तुमने मुझे बहुत खुश किया है, अज़्ज़ी," उन्होंने कहा.
"मैं अब ख़ास मसालेदार राजमा की एक डिश के बारे में सोच रही हूँ" माँ ने कहा.
"नए बीन्स, नया जीवन," दादी ने खाना पकाने के बर्तन को आग से उतारते हुए कहा.
और बोबो मुस्कुराया, क्योंकि वह हमेशा ही मुस्कुराता था.

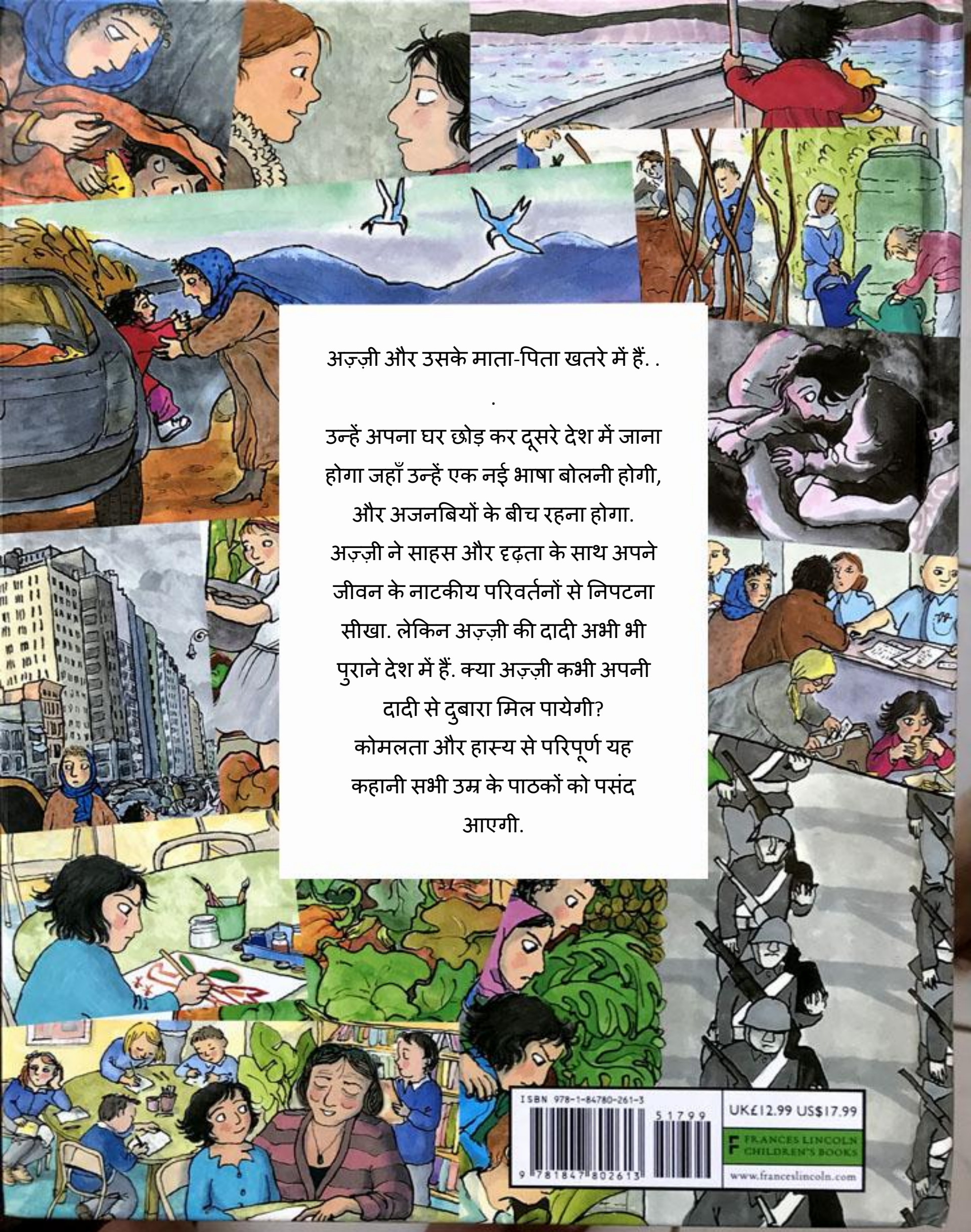

अज़्ज़ी और उसके माता-पिता खतरे में हैं. . .

उन्हें अपना घर छोड़ कर दूसरे देश में जाना होगा जहाँ उन्हें एक नई भाषा बोलनी होगी, और अजनबियों के बीच रहना होगा.
अज़्ज़ी ने साहस और दृढ़ता के साथ अपने जीवन के नाटकीय परिवर्तनों से निपटना सीखा. लेकिन अज़्ज़ी की दादी अभी भी पुराने देश में हैं. क्या अज़्ज़ी कभी अपनी दादी से दुबारा मिल पायेगी?
कोमलता और हास्य से परिपूर्ण यह कहानी सभी उम्र के पाठकों को पसंद आएगी.

ISBN 978-1-84780-261-3
51799
9 781847 802613
UK£12.99 US$17.99
FRANCES LINCOLN CHILDREN'S BOOKS
www.franceslincoln.com